कुछ सवाल

पाब्लो नेरूदा

कवि – परिचय

पाब्लो नेरूदा का जन्म दक्षिणी अमेरिकी देश चीली के पराल शहर में 12 जुलाई , 1904 ई . को हुआ था । नेरूदा का मूल नाम नेफताली रिकार्डी रेयेस वसोआल्टो था , किंतु चेकोस्लोवाकिया के प्रसिद्ध कवि जान नेरूदा की स्मृति में उन्होंने अपना यह नाम लिखना आरंभ किया और इसी नाम से प्रसिद्धि पायी । उन्होंने सातियोगों के चीली विश्वविद्यालय में फ्रेंच और शिक्षाशास्त्र की पढ़ाई की । नेरूदा की ख्याति एक विचारक और लेखक के साथ – साथ राजनीतिक कार्यकर्त्ता के रूपमें भी रही है । 1927 ई . में नेरूदा को कौंसुलर बनाकर बर्मा भेजा गया । आठ वर्षों तक वह सीलोन , जावा , सिंगापुर , ब्यूनस आयर्स ; मैड्रिड और वार्सिलोना में काम करते रहे । स्पेन के गृहयुद्ध में रिपब्लिकन्स के पक्ष में उनकी नेतृत्वकारी भूमिका थी । 1950 ई . में पिकासो और पॉल रॉब्सन के साथ उन्हें विश्वशांति पुरस्कार दिया गया । 1973 ई . में उन्हें साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार मिला । 1973 ई . में ही सैनिक प्रतिक्रांति के जरिए अय्येदे सरकार के तख्तापलट के ठीक बाद उनका देहांत हो गया ।

नेरूदा की प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं – ट्वेंटी लव पोयम्स एंड ए साँग ऑफ डिस्पेयर ; रेजिडेंस ऑन अर्थ कॅटी जनरल , दि कैप्टेंस वसस । उनकी आत्मकथा ' मेमोयर्स ' . दुनिया भर में पढ़ी गयी ।

कविता का भावार्थ

इस कविता में पाब्लो नेरूदा ने परिवर्तन का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए कहना चाहा है पारंपरिक कार्यकारण पद्धति से ही सबकुछ नहीं होता । देश – काल और प्रसंग के अनुसार विविध ता का स्वीकार भी प्रकृति का स्वाभाविक नियम है । इस स्थापना के उदाहरण के रूप में कवि समुद्र के पानी आदि की प्रकृति की चर्चा करता है ।

कवि कहता है कि यदि स्थापित कार्य – कारण नियम के अनुसार ही सब कुछ होता है तो समुद्र का पानी खारा कैसे हो जाता है , जबकि उसमें गिरने वाली सारी नदियों का पानी मीठा होता है । ऋतु – परिवर्तन के साथ पेड़ – पौधों आदि में पुराने छाले , पत्ते आदि छूटते – टूटते और नये निकलते हैं , ऐसा होना भी किसी स्थापित नियम के तहत नहीं दिखता । जाड़े में संकुचन की स्थिति बनती है और घास कटने के बाद अधिक तीव्रता से बढ़ती – फैलती है ।

कवि प्रकृति की अंत : स्थ गतिशीलता – परिवर्तनशीलता की तरफ ध्यान आकर्षित करना चाहता है । पूछने की शैली में वह कहता है कि जड़ों की स्वाभाविकता धरती के अंदर जाना है परंतु क्यों और कैसे वे जड़ें बाहर निकल आती हैं । रंग और फूलों में अपनी अलग – अलग विशेषताएँ होती हैं , जो किसी लीक से बँधी नहीं होती । हर फूल – फल , पेड़ – पौधे आदि हवाओं का स्वागत अपने – अपने ढंग से करते हैं । यहाँ तक कि वसंत ऋतु भी हर वर्ष , हर समय और हर किसी के लिए एक नहीं होता । वह देश – काल के अनुरूप विविध रूप – रंग सहज ही स्वीकार करता रहता है ।

https://www.evidyarthi.in/